ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-6* September-2020
Anthology : The Research

धार्मिक समानता

Religious Equality

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

नसीम फातिमा
पूर्व प्रवक्ता,
दर्शन शास्त्र विभाग,
हनमंतु महाविद्यालय लाहुरपुर,
हनमानु गंज, इलाहाबाद, उतर प्रदेश, भारत

सारांश

हमारा प्रतिपाद्य विषय बहुत व्यापक और जटिल है। फिर भी इसके महत्वपूर्ण पक्षों को समझने का और पाठको के मन में उठने वाले संदेहों को दूर करने का भरसक प्रयास किया है। इस विषय की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता दो बिछड़े ध्रुवों के एकीकरण की अन्ततः एकता है। जैसा कि इसके विषय (धार्मिक समानता) से स्पष्ट है कि धार्मिक समानता अपरिहार्य है पर यह समानता कहॉ पर है और किस प्रकार से है? यह हमने बताने का भरसक प्रयास किया है, इसकी समस्या और निवारण का भी प्रयत्न किया है। आज के युग में इस दर्शन की परम–आवश्यकता है तथा वेद, उपनिषद, गीता,– कलाम–पाक और हदीस शरीफ के एकीकृत दर्शन की भी परम आवश्यकता है। क्योंकि यह मनुष्यों तथा राष्ट्रो के बीच परस्पर प्रेम की भावना जागृत करती है। सब लोगों में तत्वतः तादात्म्य की भावना से अधिक और कौन सा ज्ञान इस कार्य में प्रभावशाली हो सकता है? ईशोपनिशद में कहा गया है कि यह ज्ञान सब द्वेष, पक्षपात और ईर्ष्या की जड़े काट देता है और विश्व में प्रेम का भाव जागृत एवं पल्लवित करता है। जब तक हमारे मस्तिष्क में स्वार्थ और एंकागिता विद्यमान रहती है तब तक हम उस ईश्वरीय एकता तथा धार्मिक एकता से अनभिज्ञ रहते है।

Our topic is very broad and complex. Nevertheless, every effort has been made to understand its important aspects and to clear the doubts that arise in the minds of the readers. The most important feature of this subject is the ultimate unity of the integration of two separated poles. As is clear from its topic (religious equality) that religious equality is inevitable but where is this equality and in what way? We have tried our best to tell this, and have tried to solve its problem. In today's era, this philosophy is absolutely necessary and integrated philosophy of Vedas, Upanishads, Gita, Kalam-Pak and Hadith Sharif is also absolutely necessary. Because it awakens the feeling of mutual love between humans and nations. What knowledge can be effective in this work, more than a sense of identity among all people? It is stated in the Isophanishad that this knowledge cuts off all the malice, partiality and jealousy and awakens and fosters a sense of love in the world. As long as selfishness and inclination remains in our mind, then we remain ignorant of that divine unity and religious unity.

मुख्य शब्द : धार्मिक समानता.ज्ञान मीमांसा, सर्वांगीण, सनातन, श्रुति, पैगंबर, ,वेद, कुरान पाक।

Religious equality. Gyan Mimamsa, All-round, Sanatan, Shruti, Prophet,, Vedas, Quran Pak.

प्रस्तावना

वर्तमान परिवेश में इस बात की परम आवश्यकता है कि हम धर्म की वास्तविकता तथा मानव के उद्देश्य को यथार्थ रूप् से जानने का प्रयास करें जिससे कि हमारी आने वाली पीढ़ी समग्र और विकासशील बन सके। जितने भी धर्म हैं सबका उद्देश्य मुख्यतः एक ही है जो कि सत्य मार्ग पर निश्काम कर्म करते हुये ईश्वर को प्राप्त करना है जिससे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का विकास शांतिपूर्वक हो सके।

वेदो के अनुसार ईश्वर एक है किन्तु उसके नाम अनेक हैं और वह निराकार है।

ईश्वर को परम ऐश्वर्ययुक्त होने से इंद्र, सर्वाधिक विश्वसनीय मित्र जैसे होने से मित्र, श्रेष्ठ वर्णीय होने से वरूण तथा विद्युत आदि के रूप में सर्वव्यापक शक्ति होने से अग्नि कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त वह अलौकिक प्रकाश्युक्त होने से 'दिव्य', सुन्दर पालने वाला होने से सुपर्णा तथा महान आत्मा होने से 'गरूत्मान' भी है।

यद्यपि वह परम सत्ता एक ही है फिर भी मेधावी जन उसके गुण–कर्म–स्वभाव के अनुरूप बहुत प्रकार के नामो से बुलाते हैं। इसलिये कोई इसे अन्तरिक्ष में स्पंदन करने वाला कहता है।

इसलिये 'हदीस शरीफ तथा सत्यार्थ प्रकाश में इसके एक सौ नामो की व्याख्या की गई है।

ओ न तस्य प्रतिमौअस्ति यस्य नाम मध्द्यशः ।

हिरण्य–गर्भेइत्येश मा मा हिं सीदित्येशा यस्मानजाम इत्येशः।

जिस ईश्वर का नाम और यश सबसे महान है उसकी कोई प्रतिमा प्रतिकृति मूर्ती या आकृति नहीं है। उसकी महिमा वर्णन अनेक मंत्रों में हुआ है जैसे कि हिरण्यगर्भ ..... इत्यादि।

(यजु0 25/10) मा, मा हिंसीद..... कुरान श्रीफ में, –

अल्लाह पाक के 99 नाम उसके विभिन्न गुणों के द्योतक हैं।

वेदो मे कहा गया है कि वह सर्वशक्तिमान है, और सर्वज्ञ है।

हे मनुष्यों ! जो परमात्मा सर्वशक्तिमान तीनों शरीर से रहित, नाड़ी बंधन से रहित, पवित्र कभी अन्याय या पाप से दूशित न होने वाला, सब ओर व्याप्त सर्वज्ञ है। सब जीवों की मनावृत्तियों का ज्ञाता स्वयं की सत्ता से विद्यमान वह परमात्मा प्रवाह से सनातन अपनी संतान के लिये यथार्थतः सब पदार्थो की व्याख्या करता है। वही उपासनीय है।

इसी प्रकार कलाम पाक में अल्लह के गुणों की व्याख्या की गई है। जैसे – रहीम – दलायु

कादिर – शक्तिमान

राजिक – अन्नदाता

आदिल – न्यायाधीश

वेदो में 'प्रार्थना हमारी सुनो प्रभु' कहा गया है। अर्थात – हे ज्ञान द्वारा देखने योग्य, अन्तर्मयी परमेश्वर आप हमारे हृदय में प्रकाशित हों। आपने इन समस्त सांसारिक पदार्थो को अलंकृत किया है। आपही उनके नित्य रक्षक है उनकी रक्षा कीजिए और हमारी स्तुति को सुनिये।

कुरान पाक– में यही बात कही गयी है –

'एह–दिनस्सिरतल मुस्तकीम' ।

कलाम पाक–पारा (30)

अर्थात् ऐ अल्हा पाक हमें सदैव सीधा रास्ता दिखा, ऐसा रास्ता जिस पर आपने इनाम (पुरस्कार) दिया है न कि ऐसा जिस पर आपका आजाब (दण्ड) हो।

इस प्रकार कुरान–पाक तथा वेदो में सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं मानवीय कल्याण के लिये अनेक मंत्र व कलाम आये हैं। इन्ही ग्रन्थों के आधार पर ही प्रत्येक देश की सामाजिक व्यवस्था व शासन व्यवस्था चल रही है। चाहे वह बौद्ध धर्म को ही क्यों न स्वीकार करता हो।महात्मा बुद्ध ने भी वेदो तथा उपनिशदों की ही बाते कही हैं।

इस दुनियॉ का प्रत्येक मनुष्य अंत में आता श्रुतियों पर ही है वह चाहे इसको नकार ही दे, चाहे वह लालची व्यक्ति ही क्यों न हो लालच वश वह अधिक धन संगृह करता है लेकिन अंत में सब कुछ छोड़कर चल देता है।

श्रुतियों के आधार पर जीवन संभल जाता है।

वर्तमान समय में वैज्ञानिक श्रुतियों को नकार रहे हैं लेकिन उनकी पूरी पद्धति श्रुति के आधार पर ही है।

आज मनुष्य की सोच आधुनिक समय की है इसके कारण कर्म करने का ढंग अलग हो गया है जो श्रुतियों के विपरीत है जिसे अविद्या कहा गया है। अविद्या के कारण ही मनुष्य सांसारिक माया जाल में फंसता जा रहा है जिससे सुख–शान्ति समाप्त हो गयी है। कोई व्यक्ति किसी अन्य (प्राणी) के विशय में संवेदनाशील नहीं है। किसी के मन में संवेदना रह ही नहीं गई है, मात्र एक अन्धी दौड़ जो पता नहीं हमें कहॉ लिये जा रही है। जब सारे मनुष्यों की मानसिकता श्रुतियों के विपरीत हो जाती है तो लोगो की मानसिकता को श्रुतियों पर लाने के लिये किसी भद्र पुरूष का जन्म होता है जिसको हम पैगम्बर या महापुरूष कहते हैं।

पुराणों के प्रकांड पंडितों के विचारानुकूल इस्लाम के पैगंम्बर मोहम्मद सल्ल0 का वर्णन भागवत् पुराण में निम्न श्लोक उनके चरित्र एवं पवित्र निशनियों के आधार पर दिया गया है। वह इस श्लोक में निहित है –

सर्वभूतसुहृच्छान्तों ज्ञानविज्ञाननिष्चयः ।
पष्यन् मदात्मक विष्व न विपद्येत वै पुनः ।।

अर्थात् – जिसने श्रुतियों के तात्पर्य का यथार्थ ज्ञान ही नहीं प्राप्त कर लिया, बल्कि उनका साक्षात्कार भी कर लिया है इस प्रकार जो अटल निश्चय से सम्पन्न हो गया, तथा समस्त प्राणियों का हितैशी सुहृद होगा और उसकी वृत्तियॉ सर्वथा शान्त रहती हैं।

वह समस्त प्रतीयमान विश्व को मेरा ही स्वरूप – आत्मस्वरूप देखता है। इसलिये उसे फिर जन्म–मृत्यु के चक्र में नहीं पड़ना पड़ता ।

सृष्टि के आदि से लेकर अन्त तक जो परमात्मा का वेदरूपी ज्ञान है और जो प्राचीनतम से प्राचीनतम ऋग्वेद है उसमें पैगम्बर मोहम्मद सल्ल0 एवं अन्य पैगंबरों का भी वर्णन मिलता है। जो सदाचारी ईश्वर आश्रित, भक्त व श्रुतियों का प्रकांड विद्वान पुरूश समस्त जीवों का स्थावर एवं संगम का भी ध्यान रखे और आत्मसात करता हुआ उन्नति की ओर ले जाये तो वे पुरूष ही महापुरूष व पैगम्बर कहलाते हैं। इसका वर्णन ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में इस प्रकार है –

ओ त्वमायस प्रति वर्त्तयो गोर्विवो अष्मान मुपनीत मृष्वा ।
कुत्साय यत्र पुरूहूत वन्वअहु पणामनन्तैः परियासि वधैः ।।

अर्थात् – हे (वन्वन्) अच्छे प्रकार सेवन करते (पुरूहूत) बहुत मनुष्यों से ईर्ष्या के साथ बुलाये हुय मनुष्य ! (त्वम्) तू जैसे सूर्य (दिवः) दिव्य सुख देने वाल प्रकाश से अंधकार को दूर करके (अष्मानम्) व्याप्त होने वाले (उपनीतम्) अपने समीप आये हुय मेद्य को छिन्न–भिन्न कर संसार में पहुॅचाता है, वैसे (ऋभ्वा) मेधावी अर्थात् धीर बुद्धि, वाले पुरूष के साथ (आपसम) लोहे से बनाये हुय

शस्त्र–अस्त्रों को लेकर (कु–त्साय) वज्र के लिये (षुश्णम्) श्त्रुओं के पराक्रम को सुखाने हारे बल को धारण करता हुआ (यत्र) जहॉ गौओं के मारने वाले है वहॉ उनको (अनन्तैः) जिनकी संख्या नहीं उन (वशैः) गोहिंसको को मारने के उपायों से (परियासि) सब ओर से प्राप्त होते ही उनको (गोः) गो आदि पशुओं के समीप से (प्रति, वत्तर्यः) लौटाओ भी।

ऋग्वेद–1–अ0–7– व 22, 23, 18
अथर्वेद–20–128

इसीलिये संसार के सारे विद्वान एक मत है कि हमारे आदि ग्रन्थ एवं श्रुति पवित्र वेदो और मनुस्मृति के अलावा और कुछ नही। इनको प्राचीनतम् मानना ही प्रासंगिक होगा। भारतीय ही नहीं वरन् पाश्चात् विद्वान इसपर भी एक मत नजर आते हैं कि मनु ही अवतार नूह है तो अब सनातन धर्म या वैदिक धर्म का अवतार ही जब मिल गया तो समस्या का एक बड़ा निदान तो हो ही गया। यदि समय और काल को तराजू पर हम मापन करे तो उपनिशदो और गीता के मूल मंत्रों में केवल समय और भाशा का ही अन्तर दृश्टिगोचर होता है।

अर्थ की समीपता तो इस सीमा तक है कि भगवानदास इनके मूल मंत्रों और मूल दर्शन में भेद को एक ज्ञानमीमांसीय पाप घोशित करते हैं।

अतः इन महत्वपूर्ण खोजो से पता चलता है कि धर्म के पवित्र संदेशो में एकता है, केवल अन्तर समय, भाशा एवं स्थान का ही है। अब इन समस्याओं का अध्ययन केवल ज्ञानमीमांसीय दृश्टिकोण से ही नही अपितु तात्विक, धार्मिक, सामाजिक एवं मानसिक दृश्टिकोण से एक मनोवैज्ञानिक अपरिहारिता एवं दर्शनिक अविश्मभाविता प्रतीत होने लगी है।

समय के साथ दृश्टिकोणों में प्राकृतिक परिवर्तन अपरिहार्य है। जब सत्य एवं निष्ठा से जो कार्य किये जाते हैं वह आशातीत सफलता के द्योतक सिद्ध होते हैं, जो धर्म और दर्शन अभी तक अज्ञानता के कारण एक दूसरे के प्रतिद्वन्दी समझे जाते रहे वे इस अध्ययन के वैचारिक एकता से ओतप्रोत हो गये हैं।

प्रकृति का यह नियम रहा है कि यदि सत्य का अवलोकन करना होता है तो उसके लिये प्रमाण प्रस्तुत किये जाते हैं यदि धार्मिक ग्रन्थों को हम पवित्र, अपौरूश एवं सत्य मानते हैं तो इनमें लिखा प्रत्येक शब्द सत्य होगा।

जैसे इस्लाम धर्म का दर्शन और वैदिक धर्म का दर्शन एक है दोनो के तटस्थ भाव एक है। जहॉ महाभारत काल के पूर्व का इतिहास अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि वैदिक एवं इस्लाम धर्म में मानव हित एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड हितों का तथा समस्त जीवों के हित को ध्यान में रखते हुये सर्वांगणीय विकास के द्वार खोल दिये गये, चाहे वह सामाजिक सृदढ़ता की बात हो चाहे धर्म और अध्यात्म की, चाहे शिक्षा व बौद्धिकता की बात हो हर प्रकार के दृश्टिकोण को वैदिक दर्शन की भांति वहॉ अरब में जहॉ मानवता त्रस्त थी वहॉ पूरी पद्धति लागू हुयी क्योंकि ईश्वर के द्वारा आदेश्ति ज्ञान जिसको श्रुति कहते हैं तथा जिस महापुरूष या पैगम्बर ने इन श्रुतियों के अर्थ को तथा मर्म को भलीभांति समझ कर अपने व्यवहार में लाया हो तो उस पुरूष का सर्वागणीय विकास होना ही है।

सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझना यह भद्र पुरूषों का ही काम है। यह अवधारणा वैदिक दर्शन तथा इसलम धर्म में ही पायी जाती है।

इस्लाम धर्म में वैदिक दर्शन क्यों पाया जाता है तथा इसका कारण क्या है ?

इसका कारण यह है कि वैदिक दर्शन और कलाम–पाक का समग्र ज्ञान कायनात (ब्राह्मड) से पहले भी था और कयामत (प्रलय) के बाद भी रहेगा। इसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता ।

उसने (ईश्वर) ने छः प्रकार से इस सृष्टि क्रम को चलाया है।

1. सांकल्पिक
2. अण्डज
3. पिण्डज
4. उद्भिज
5. स्वेतज
6. सांसाद्धिक

सांकल्पिक सृष्टि

वह सृष्टि है जिसमें ईश्वर स्वयं आदेशित करके जीवों के हितार्थ सृष्टि का निर्माण करता है। जिसमें जीव सब चौरासी (84) योनियों का भ्रमण करता हुआ तथा भोगता हुआ कर्मानुसार अन्त में मानव योनि को प्राप्त कर ब्रह्म का साक्षात्कार करके परम आनन्द को प्राप्त करता है। जो जीवात्मा का अन्तिम लक्ष्य है।

अण्डज सृष्टि

इसमें कुछ जीवों का जन्म अण्डे से होता है जिसमें – पक्षी, सर्प, बिच्छू, मगर आदि आते हैं।

पिण्डज

जो पिण्ड से उत्पन्न होते हैं जिसके अन्तर्गत – मनुश्य, पषु, प्राणी आदि आते हैं।

उद्भिज

जे उग आते हैं – जैसे वृक्ष, घास, अन्न आदि।

स्वेतज

जे स्वतः उत्पन्न हो जाते हैं। जैसे– जुऐं, मच्छर व अन्य जीवाणु।

सांसाद्धिक

इसके अन्तर्गत धातुओं का निर्माण होता है जैसे– सोना, चांदी, तांबा, पत्थर आदि।

यह छः प्रकार की सृष्टि आज भी हो रही है और होती रहेगी। मात्र सांकल्पिक सृष्टिक एक बार प्रारम्भ हुई और प्रलय के बाद समाप्त होगी।

सब जगत को धारण करने वाला और सबको वश में करने वाला परमेश्वर जैसा कि उसके सर्वज्ञ विज्ञान में जगत का ज्ञान था और जिस प्रकार पूर्वकल्प की सृष्टि में जगत की रचना की थी वैसे ही आगे भी बनायेगा, क्योकि ईश्वर का ज्ञान कभी विपरीत नहीं होता किन्तु पूर्व और अनन्त होने से सर्वदा एकरस ही रहता है। इसमें कभी वृद्धि, व्यय, उल्टापन कभी नहीं होता है।

प्रकृति का यह नियम रहा है कि यदि सत्य का अवलोकन करना होता है तो उसके लिये प्रमाण प्रस्तुत

किये जाते हैं। यदि धार्मिक ग्रन्थों को हम पवित्र, अपौरूश एवं सत्य मानते हैं तो इसमें लिखा प्रत्येक शब्द सत्य होगा।

निष्कर्ष

अतः इसका तार्किक निष्कर्ष यह निकलता है कि ऋग्वेद और अथर्वेद पर यदि हमारा ईमान है तो उसमें मुहम्मद सल्ल0 के लिये भविश्यवाणी, पहचान औरि

दार्शिक संकेत

(1–18–9) (1–106–4) अथर्वेद –(20–128–12, 3, 7 , 13) में दिये गये हैं वे भी पूर्णतः सत्य हैं। वे भी पूर्णतः सत्य है और क्यों न हो ईश्वरीय नियम के अनुसार एक पवित्र पुस्तक का प्रमाण उससे आने वाली पहली पुस्तक में लि जाता है और वही गवाही पूर्ण हो जाती है।

यह तो हमारा अज्ञान और मानसिकता ही रही है कि हमने तटस्थ भाव से इसको अब तक देखा ही नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *श्रीमद भागवत् – 11 वी स्कन्ध – सांत्वा अध्याय 12वॉ श्लोक*
2. *ऋग्वेद – 1– 18 – 19*
3. *ऋग्वेद – 1– अ0 – 7 व 23, 23, 18*
4. *अथर्वेद – 20 – 128*
5. *अथर्वेद – 20 – 128 – 13*
6. *ऋग्वेद – 1ध्164ध्6*
7. *यजुर्वेद – 32ध्3*
8. *कलाम–पाक – सूरह अलहम्दो–पारा–30*
9. *श्रीमद भागवत – महापुराण*
10. *सत्यार्थ प्रकाश – स्वामी दयानन्द सरस्वती*